This question paper contains 4 printed pages]

HPAS (M)—2015

HINDI LITERATURE

Paper II

Time : 3 Hours *Maximum Marks : 150*

Note :— कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए । अंतिम प्रश्न क्रमांक 10 अनिवार्य हैं । **सभी** प्रश्नों के अंक समान हैं ।

1. निर्धारित पाठाधार पर कबीर के लोक धर्म का स्वरूप बताइए । 30

2. 'प्रेम नाम की मनोवृत्ति का जैसा विस्तृत एवं परिपूर्ण ज्ञान सूर को था, वैसा किसी और कवि को नहीं'—इस कथन के प्रकाश में सूरदास के काव्य में व्यक्त प्रेम के स्वरूप का सप्रमाण विश्लेषण कीजिए । 30

3. 'कवितावली' के उत्तरकांड के कलिवर्णन में तुलसी के आदर्श और यथार्थ के बीच द्वन्द्व में उनकी कला की सर्वोत्तम प्रतिभा का परिचय मिलता है — इस कथन की सत्यता की परीक्षा कीजिए । 30

4. 'अँधेर नगरी' एक राष्ट्रीय रूपक है—इस कथन की समीक्षा कीजिए । 30

P.T.O.

5. 'चन्द्रगुप्त' नाटक की अभिनेयता पर विचार कीजिए । 30

6. 'अंधेरे में' कविता के काव्य-शिल्प का सोदाहरण विवेचन कीजिए । 30

7. मानसरोवर, भाग-एक में संकलित 'ईदगाह' एवं 'मनोवृत्ति' कहानी का मनोवैज्ञानिक दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन कीजिए । 30

8. 'धूमिल मात्र अनुभूति के नहीं, विचार के भी कवि हैं ।' इस कथन के आलोक में 'पटकथा' कविता में विचार एवं अनुभूति के अंतर-संबंधों का विश्लेषण कीजिए । 30

9. 'शेखर : एक जीवनी' में अभिव्यक्त क्रांति एवं नियति संबंधी शेखर की विचारधारा का परिचय दीजिए । 30

10. निम्नलिखित अवतरणों की व्याख्या कीजिए : 2×15=30

(क) बेद-पुरान बिहाइ सुपंथु, कुमारग, कोटि कुचालि चली है।
कालु कराल, नृपाल कृपाल न, रामसमाजु बड़ोई छली है॥
बर्न-बिभाग न आश्रम धर्म, दुनी दुख-दोष-दरिद्र-दली है।
स्वारथको परमारथको कलि रामको नाम प्रतापु बली है॥

अथवा

बताओ तो कि किस-किस के लिए तुम दौड़ गये,

करुणा के दृश्यों से हाय ! मुँह मोड़ गये,

बन गये पत्थर,

बहुत-बहुत ज्यादा लिया,

दिया बहुत-बहुत कम,

मर गया देश, अरे जीवित रह गये तुम !!

(ख) रोगी की शुश्रूषा एक विज्ञान है, बुद्धि पर आधारित है, उसमें भावना के लिए स्थान नहीं है । पाश्चात्य सभ्यता से आक्रांत लोग उस भारतीय माँ पर हँसते हैं, जो रोगी बच्चे को डॉक्टर के पास नहीं ले जाती, छाती से चिपटाकर रातभर सुन्न बैठी रहती है..... निरा प्रवृत्तिजन्य प्रेम-पशु-माता की आहट शिशु के लिए निर्बुद्धि व्याकुलता ये वैज्ञानिक शुश्रूषा नहीं हैं; पर अनिवार्य तो है-कम-से-कम विज्ञान-सी अनिवार्य-धमनी के स्पंदन-सी अनिवार्य ..... और जहाँ विज्ञान अपनी लाचारी जानता है, वहाँ इस मूल वृत्ति की शक्ति ही एक शक्ति है, जो लाचार नहीं — मृत्यु के आगे भी नहीं ।

P.T.O.

अथवा

मुझे न मालूम था कि मेरे कैद होते ही लोग मेरी ओर से यों आँखें फेर लेंगे, कोई बात भी न पूछेगा । राष्ट्र के नाम पर मिटने वालों का यही पुरस्कार है, यह मुझे न मालूम था । जनता अपने सेवकों को बहुत जल्दी भूल जाती है, यह तो मैं जानता था; लेकिन अपने सहयोगी और सहायक इतने बेवफा होते हैं, इसका मुझे यह पहला ही अनुभव हुआ; लेकिन मुझे किसी से शिकायत नहीं है । सेवा स्वयं अपना पुरस्कार है । मेरी भूल थी कि मैं इसके लिए यश और नाम चाहता था ।